

१२८ यथान्तोत्रमप्यलं च

नोश्च ज्ञानो न प्रलं

आशा आरुभि
ASHA ARCHIVES

3256

सुवर्णे दानेन ॥ पौस्तक कवनेन ॥ द्विज पखा भोजनाद्यत ॥ गोदान कुमारा
पूजा ॥ इह देवता पूजा ॥ मन्त्र चक्र ॥ रते दानेन सर्व रोग प्रशेति ॥ देवा वर
त्रय दशरात्रे मन्दपतति ॥ दिवसेन मुच्यते ॥ नरो बंध दशरात्रेण शुभ नष्ट
आत्रेण मुच्यते विशाखा नक्षत्र कोत्पमा ॥ १६ ॥ ॥ शुभ राटनक्षत्र महाज
न्या को नक्षत्र कान ॥ मैत्र देवता वैश्वताधि देवता शुवाहिती गोत्र हस वाह
न देव जात मृग सन्त ॥ तिर्य मुखा ॥ पश्चिम गृहे ॥ माहेष्टम एत ॥ वतुता
रा शुभार सन्त विदुः शरी ॥ संपूर्ण शुभ सन्त जात ॥ एकोफल पीत वर्ण
लोशधि मुकुत ॥ महापात वत धर्म ॥ समस्त लोक सग मित्रा मित्रा व

यशस्य्या पदि सुखी होना ॥ कुरागर्हो ह्यिष्ट रोग न्या होरा ॥ अमावा
सु गंग नर्मिया न पान्या ॥ किशान कर्म गन्या धन धरे ले आइ देत भति
वधु होना ॥ दिना लमाया बुद्धि जाता ॥ अहं काली एकताली दुष्टा होरा
शानि होला शील वन होला ॥ दुमाधारी मित्र होला ॥ खरो मानी स हो
ला ॥ वात्रा पा वध पता होरा ॥ नको निष्ठा सी सितो मिनी मति न जया को
मीत मां जो प्रिय होला विद्या जाता लो लाइ प्रिय गला ॥ धन संपतिले भा
मी होरा ॥ कपाल महा हात महा नेक महा ॥ ८५ महा एतिथा डकन
७ कथा ड महा कु थी होरा ॥ राजसेवक होला वलिकत होला ववल चत

होला विदेश दुर्ग होला सुखी होला थुरो दुख पाउला वाल खमहा वि
धा सुख पाउला एति खभाव ॥ ग्राह रमाहा मासु रोते एतना खा म
मन होला कीर्तिकर्मगला ॥ राजमन्त्री होला सुविवंत होला पण्डित
होला मूलवंत होला एतैको शरिरातुवात पित्त होला ॥ चते रोग दि
न १० महा ॥ श्रेष्ठा दूदय मूल जोर मास ४ महा ॥ श्रेष्ठा ॥ श्रकाल
मृत्यु वर्ष ३ महा ॥ शरीर रोग वर्ष ४ महा जोर ग्राउला वर्ष ५ महा ॥
सुख सुनिला तुता ग्राउला वर्ष ६ महा वैसर्ग पेत रोग शरिरा विव
र्व २ महा तुता ग्राउला जोर ग्राउला शरिर रोग होला वर्ष ११ महा

सुख सुनिला खतिला ग्राउला जोर ग्राउला वर्ष १५ महा पेत दुखला
शरिर रोग ताकाल रहि निको होला ॥ वर्ष २५ जोर श्रकर्मगला वर्ष ३०
महा ॥ दवात महा धुतला गि वतु सदेन भिद्यते समस्त दुष मा
वर्ष ४० महा देव दोष न लेयिला ॥ शस्त्र घाल होला ॥ वर्ष ५० म
पेत रोग वर्ष ५० महा ॥ पेत रोग काल को नय मति पीय वंचत वे
त एति कुशुशव्या वर्ष ६० वा वरु ॥ मृत्यु जैष्ठ मासे रुही पञ्चा
वर्षा तिजीवति ॥ मय ते शस्त्र ज मासे सुक्र पदौ ॥ न वध्या
कि (थे) शुरु राट न दाने बुध दिने अ प मृत्यु वारणा पुस्त

कवचनश्रुधनसुयकादरानरादृश्यतेदेवोवर्षवतुशत्रेन
रोवध्विंशतिरात्रेनसुच्यते **अहप्रवेश ॥१०॥** ॥ ज्येष्ठनक्षत्र
महाजन्माकोमनुष्यकन ॥ कापलेवाहानराक्षसजातमृग
सत्त्व ॥ पश्चिमद्वार ॥ अंगारक्षत्रविक्ररासी ॥ त्रिमुखमाहर्ष
मण्डलचतुर्गिरावडशत्रिमुहूर्त्तमपूर्णाश्रथसुतोजातम
हामागीजसवतधर्मवेतविदेशदुर्गागमस्तमहासुखीश्र
हकालीराजमान्यमहाजसंवतवातरवमहादुखिपद्धिसुखी
वौरलेधनचोरैलैजालाधनधान्यहोतासंपन्नितुल्याउला नि

कोजानिपण्डीतहोला ॥ तेजवंतनृपतजालकोकारणलेदुरव
होला ॥ खात्रीग्वतापाश्रथमेकापुत्रनांशहोलातरुणवेतमहा
सात्विका निमित्रिरेदुखतकुतैहोलाइडपूजागर्ता ॥ संधामम
हाजिलाहाहोला ॥ वियाजालाशकवतकाकुलजसोहाला ॥ सा
त्रीदुर्गाग्वता ॥ रपाहिकोनिनिमहाकोखासास्थिरहोला ॥ उखः
कादलाकुलसभावविवहारनिकोहोलाजमानीलचावदानगर्त
कोमलश्रुधुशाश्रगर्ताहोलावौरवेतक्षमावतसुखमहातेक
महापकुशमहासेतमहागतामहाएतिथाउमहाएथउकथिको

ला सेना पति होला । उर्वमानी सहोला ॥ बहु तंतं वृजान्मा होला । से
वाकर्मगती लोचिले धनता श होला । छिनाल पक्षि ती धजातुता श
गन्ती होला । आहार समस्त रुति होला । इति त्वं नव एको धा तुषा
त पित्र होला ॥ जो र आउला अजीर्ण वैस्य फोला । येतरो ग रति
रो गले अकाल मृत्यु वर्ष ५ । ६ मरु होला । छव वर्षना घा पछि पेदरे
मरु होला वर्ष ॥ मरु ना घा पछि मन मरु अति दुख मत होला । तहा
पनी अजीर्ण होला । अथा ऊव वर्ष मरु होला । तपनी ना घा पछि नाना
बाधि होला ॥ पंची सव वर्ष मरु होला ना घा पछि रुषवा तपस्यता ॥

ती सव वर्ष मरु होला । ती सव वर्षना घा पछि पाउ पाउ पला । सा पले
बाला ॥ कारि सव वर्ष मरु ४० ॥ चारी सना घा पछि मत मरु अति दु
ख होला गला ॥ घर मरु कल होला । वयारी शव वर्ष ४२ मरु वयारी श
ना घा पछि विष नय होला ॥ खाती ले अपचार मरु का ले मृत्यु होला
प्रय होला ॥ नका निरुका त्या छुपाउ पाउ नय होला वर्ष ४५ मरु तव वर्षना
घा पछि शत्रु नय होला ॥ नाना बाधि ता गला रखा लि होला । एकाउन
वर्ष मरु होला त ना घा पछि बोरका नय होला ॥ एति वरु कृष्ण दे
वी साथी ६० वर्ष सप्त जिउंला मृत्यु ज्येष्ठ मासे शुक्र पक्ष पूर्णिमा ति

थौ नौ मवासरै अर्द्धरात्रे मयते शुक्ल सुवारणं तपिये असुर पक्षे ईश्वरी
शुक्ल शुक्ल दुवा फल जगता तव लिङ्ग कातन ॥ १८ ॥ ॥ मूल नक्षत्र
महाजन्मा को मनुष्य कन ॥ विधाता देवता नै अन्य देवता ग्यसा कर्म
णी गोत्र । मूल वा हान स्वान सत्वर दक्ष सजात पश्चिम द्वार वद स्याति
क्षेत्र पाद ४ धनु रासी शुद्धो मुख वरुण मण्डल एकादशतारा वि
रा अक्षुर्द्धर्त अथ सुतो जात जागी होला ता जा होला मे ना पति होला
सर्व संपत्ति होला अरु हरे उ आ आ ग न्या होला जो रवे न होला समाव
त होला मुख महा ते काम हा ॥ पाकुरा महा पेट महा गला महा ए

ति एक ० उमहा कथि होला राज्य देश कर्म गला ॥ अक्षर जा ला कौतु
शुभुत कुरा गला ॥ रोम न्या चया पनी स्वासी विन होला । कुल शील पि
य होला । छिना ल होला । धन वने होला । तरुण वेत महा धन लाभ हो
ला ॥ साहा सि होला ॥ खासि पाव ग्वता प होला ॥ अघि को खासी त्या
गरि मला ॥ इत पछि को माफि गरि होला ॥ इत पछि को चख होला ॥
वाउ सग कचार गन्या होला ॥ हात महा धन रह दैन राज से वक सग
ममहा भय होला ॥ बाल व महा दरिद्र होला पछि धन धान्य सुख हो
ला येति महा वरु उपति होला ॥ मिथो २ वरु नै खान्या होला ॥ सगि ह

रुसंग॥ कचारग न्या होला॥ शुधीरवचन आ हा ग न्या तम स रु वि होरा
शरीर धातु वात। पित्त॥ माया बुद्धि जा ला॥ विद्या जा ला पुत्र भागी त्या मी
ले डुरव दे ला ता ना भ। तिक ला जा न्या त्या मी पाड ला दान व न्न दान कर्म
ग न्या प रं देश जा तु मान मन हो ला स्वा तु तितो शु मि रो उरी यी मि थो
स्वा तु मन मात्र मन हो ला॥ रोग अजी ए हो ला एक मा स ना ध्या प हि
जो र आ ड ला पेट डुरव ला ए ति रोग लेश काले मृत्यु व र्ष १ महा ना ध्य
प हि दारि रोग लेश काले मृत्यु हो र॥ रक्त प र्वा र ले डुरव हो र डुरी
व र्ष २ ना ध्या प हि मृत्यु॥ पा द व र्ष महा हो ला॥ ना ध्या प हि जो र आ ड

ला मुख सु नि ला॥ दश व र्ष १० महा हो ला ना ध्या प हि पेट डुरव ला
ग्रह दोष हो ला॥ प ड व र्ष १५ महा हो ला ना ध्या प हि आ ड सर्व असु
नि आ ड ला॥ गा इ ले हा ला॥ जो र आ ड ला प विस व र्ष २५ महा हो ला
अ हो दा ध रा व द्वा त्रि पा तित हो ला॥ ति स्र वा ट व सू ला॥ ती स व ३०
व र्ष महा हो ला॥ ना ध्या प हि पेट रोग हो ला जो र आ ड ला द क्षी रोग
हो ला॥ रु ख वा ट व सू ला॥ पंचा श व र्ष महा हो ला॥ ना ध्या प हि
वो र ले ख न वो र ले जा ला प्र य हो ला॥ रक्त नि र्का न्या घा ड पा ड प
र ला॥ ए ति व र्ष कु नु श का दे षि शत श त्रि व र्ष ७७ सम जि ड रू ॥

ते ग विना यतिला अजी एजोर नेत्र रोग व्याधि मन वृत्त नीया ॥ मूल
नक्षत्र बुधवार दिने ॥ अकार मृत्पुवारणे अश्वत्थे देवदारु दुर्वाफ
न अग्निजोग कृत्वा निरिमास मार्गसिरव लिषकारे शान्त यति म
न्ये पतति द्वादश रात्रे तमुच्यते ॥ मूलायामानतो व्याधि उमासेन
विवाहा विद्यारं गृहकर्मसि रगत्वात् ॥ १२ ॥ ॥ पूर्वोष्णतनू
महाजन्मा को मनुष्यकत ॥ करणा वाहान मनुष्यजात वनकरस
त्वं ॥ आप देवता रुतुमंत देवता कुक्षीरगौत्रे ॥ पश्चिम दारु रुतु
तीक्ष्ण धनु रासी अधोमुख वरुणामण्डल ॥ वतुता श्रथसूतो

जात ॥ एकोफल ॥ श्यामवर्ण अथवा श्वेतवर्ण ॥ ध्वंषवल पुरशरीर
सत्त्व लोकवत ॥ हात महाधन रहै देन ॥ सगाम महाजितम्पा हो
ला मस पाउला ॥ बालक महादुखी होला पद्धि सुखी होला पाति
कर्म सेवहुला भूला यापाल कर्म सेवहुला नाफा होला कवार
गर्भ होला धात्री पा रं वता पहाला होरा होरा अथी रवतत हो
ला अमोवावुहे उशकैन नमिर्पा होला ॥ धर्मवेत होला ॥ सानो व
हु सपनी लाको मान्या आपनो ला सीत गमाउन कडो पृतिगर्भा
होला अकाको रीसी सगनि को मां दैन आपनो ला धीजस्तो होला

राजसेवक होला संगी संग कचारग न्य होला ॥ संगाम मम हा ला भ होला
वहुत बाइ हि न्य होला ॥ नमि न्य होला ॥ थीर विज्ञ हो दे न थी ल ड व
कल रुकु न्य होला ॥ अमा वा दु स ग वा द ग न्य होला पखात दुखी हो
ला ॥ पु रति भागी होला ॥ बह कर्म ग ला ॥ धन वत थी र स्व भा व
वहुत लोक संग समा धारी होला ॥ का तु मा तु हा तु म हा व डो द
व मान होला लो जि होला पुत्र भा गी कुरा सि पार होला ॥ सुष म
हा ना वन हा मुखे म हा एक था उ जो धि होला अहा र ग न्य सि म त्त
ह वि होरा वहुत अमिरो मिथो म हा विज्ञ जांला शरी र धा तु वा त

पित्र होला आखा दुख ला खति रा आ उ ला मास प म हा होला ये द
ख ला आ भु पित्र होला सात उ व र्ष म हा होला का स स्वा स म हा हो
ला अजी र्ण क पा ल दुख ला जो र आ उ ला अति सार होला ए ति रो
ग ले अ का ल मृत्यु अष्ट व र्ष म हा होला आथ व र्ष ना ध्या प छि रे तु
ले भ प्रय होला ग्र ह दोष होला वा ऊ व र्ष म हा १२ होला ना ध्या प
शुभ प्रय जो र आ उ ला ये ट रोग होला ष टि ला आ उ ला ना ना ध्या वि
होला ऐ ति रो ग ले अ का ल मृत्यु वी स व र्ष म हा २० होला ॥ वी स व र्ष
ना ध्या प छि गा र ले हा ला संगाम म हा भ य होला ॥ व ती स व ३२

महाहोला ॥ वीशनाथापद्धि सन्निपातजोरदाघवारिगवर्षमहा
होरा नाथापद्धि जोरग्राउला श्रुतिसारहोला सेंताउनेवर्ष ५७ म
हाहोला नाथापद्धि जोरका नयहोला एतिष्वर्कछनुशक्यारक
सीवर्षसंमजिउछ ॥ एतेदिनेमृयते मर्त्येपतति परमआयुएकाः
शीतिवर्ष ॥ तिजीवति मृत्युआषामासे कल्पपक्षे षष्ठ्यानि थोश्रु
रूमीवा श्रुष्टेवानक्षत्रे श्रुथवासूनक्षत्रे छरुष्टुत्रा श्रुद्धरात्रे देहने
जैतूरकरेनमुचते अथानुनदृश्यते श्रुपमृत्युवाररा श्रुमिजो ग
जलजोग मातरीजोग दुजतपत्नी भोजनवल्परारा दीघाष्टुजी

वति पूर्वाषाढनक्षत्रकोसुखदुखसमाप्ता ॥ श्रुवा ॥ उत्तराषाढनक्षत्र
कोजन्माकोनक्षत्रकन विश्वदेवतावकुलावितवाहनमनुष्यजा
नवनकारसन् ॥ गोसन् ॥ पद्धि मदार माहेदमभुत ॥ त्रिताराउध
भुष्ट ॥ ब्रह्मातीक्ष्णपादशनीश्वरपादश्वभुशसीपादप्रकर
पादश्रुथसूतो जात उद्धर्त एकोफलरक्तवर्णलोकमिथ्या
होला कुरातिपालुहोरा शानि प्रदेशमहासुखलान् कामगत्या
जाकुदाहोला कुलाउन्मा फकट खान्या आपना घरमहा मात्र
सुखहोला जगो होला प्रदेशमहादुखीहोरा विशामहावित्रहो

ता निर्वर्तितया स्वास्त्री नाग्य हो ता घर मरु कल रुग न्या हो ता अग्नि
मरु मरु न्या हो ता छुडि हो रा त्वा स्त्री न्य ता उती न हो रा सत्य वा दो
हो ता अरु का री १२ दशा जातु मन छो रा हो ता न मरु क ठ मरु ते
कर मरु क य ता मरु क रति था न मरु क एक था उ मरु क को थी हो रा
क था सु ना डि य हो रा देश देश ते र भ म न ग न्या हो रा वौर चेत हो
पुत्र वत रति वि य अति अज्ञानी हो रा अ न गत मरु क लुखी हो म प
नि गंभीर हो अधमी हो रा राज कर्म ग रा आहार ग न्या सम स्रानि
को मांछ एको एति विहर हो रा शरीर धातु वात पित्त हो रा अति भा

र पिट्ट दुख र श्वर आउ ला ग्रह दोष मातृ प मरु नाघा पाहि स्रेष
लागला एति रोग र अकाल मृत्यु एका वर्ष मरु नाघा पाहि कफ
लागला रक्त पक्का पाव वर्ष मरु नाघा पाहि वैषम्य साक्षि रोग
पेट रोग जोर आउ ला नव वर्ष मरु नाघा पाहि स्वथ वा की मय
समुद्र मय हो ला वा हा ड व न्या प धे वर्ष मरु नाघा पाहि वाट
मरु मृत्यु मय हो ला मरु क पा पि हो रा यथा धे वर्ष मरु नाघा
पाहि गाइ ले हां ला शत्रु मय शत्रु मय पकार इत्यव वर्ष मरु
एका इत्यव वर्ष नाघी पाहि वृक्षा निपातित ॥ तीत्यव वर्ष मरु ना

नाघीपक्षी जौ रजय नदी उवाह नय पचास वर्ष प. म हा पचास
 नाघीपक्षी रंया मघा ७ पाउ रे मृत्यु हो रा इति छत्रेश कौ. विन
 वै २० वर्ष स म जीवतु अप मृत्यु कारणा वि वि आया देव दारु
 प्रस पूर्वा फल अग्नि जाग कृत्वा अथु सत पु न य पु वे स आया रा र
 योग शिव कर्म वित्र कर्म पु त्रि क व व न ता रि उ हार समाति
 न वे स ग न व क्र ए मे दि ना ज व ति म दे प ते ति द श रा त्रे ए मु च्य ते
 अ धो न सु न व रा त्रे ए से ते दे वो व र्ष प व रा त्रे ए मु च्य ते स त्वा रं भा

२ रु ख्या प त भा ज रे स त स्त वै व मा से क यू प दो अ थ वा आ व न मा से
 त्र नो द श्पा ति थो व तु द शी अ त्र रे व द वा स रे अ थ वा श नि श्च रे थ
 दि त्प वा स रे अ द्दि ने अ द्द रा त्री दे ही त्प जे त् इ ति उ त्तरा ष्ट द न
 स त्र का सु ख दु र व स मा प्र ॥ २ ॥ ॥ अ व न न द अ उ म हा क न वि श्व
 दे व त म तु वा वा हा न दे व जा न ह तु म न स त्प ह्नि म हा रा उ ध
 सु ख मा रु द म ए ल प व मु कु त् श नि श्च र स त्र ४ म क र रा सि
 अ थ स म जा त रे को फ ल हे ति मा नी स हो रा हे ति म न हो ॥ पु छि
 व त्ता रा सा मा व त व ल व त यो वा ल व प्र वा प ह्नि पा व म हि ना

पुदा महाधनलाभ होला प्रदेश सुखी होला वनजक मूलि वहुने
लाभ होला स्वास्ति रूग्ता लोक प्रसाति, सिनाल करुणा धर्म
देव पूजा गुरुरस्य धरमहा मोधी, अपमा घरमहा भागी राजसेवक
राजसेवा महा मृत्यु प्रय होरा साधु गस्ति दुषन्या च नति वैयासा पु
त्र एक होला अहं काली मान्य पाउला हान महा पुता महा पेत म
हा रति थाउ एक महा क। धि होला सर्वधी ति दर्शन होरा पीत व
र्ण श्रेय वास्या मवर्ण स्वास्ति निको पाउला रूप वतज्ञा निखास्ति
पाउला प्रसादिक होरा, जोगी भाग्य मानी लोनि विदमन वा

होला उद्यक मपनी गता विदेश महा सुधी वहुत मित्र गंभा
एतल मति होरा सुक्रि गन्ता होरा थार व दारिद्र्य पक्षिधन भय
आउला स्वास्ति सगमिर्था स्वास्ति केवला महा वतरा, आपु नजरवा
स्त्री क बुद्धि साधो कर्म गन्ता पाप कर्म गत्या कोरे, सुद कुदरो गस्तु
आउ मोता या को जस्तो सुख सुनिश्चा या को जस्तो, पाप कर्म लि ए
का दुइ वर्ष दुखी कत सुख महा कुरा मनु नसा कि थाउ मवे निन
गया जहि दुखी कत मृत्यु होरा अति जोति कजाता व्यापार गत्या
लाभ होला गाइवा का वहुने लाभ होरा हाट महा पेत महा पुता म

कुरागर्दामहा हासिकज्जु कुरागन्याहोरा, आहारसामक्ष्यं विहोरा
 शतिस्त्रिमास, शरीरधातुवातपित्त आत्मा दुर्धता, का नदुस्वलातु
 तोया उला, एतिरो मले शकाले मृत्यु कारवर्ष ४ महा, नाधीपहि
 वैसर्वहोला, रक्तपला कपाल दुस्वला वज्रपशला, भयवा ३ व
 र्षमहा १२। नाध्यापहि पेट रोग वीसवर्षमहा २० नाध्यापहि पद
 दोषजर आउला, वर्ष २७ होला, नाध्यापहि, पेट दुस्वला अतिमाल
 होरा, वर्ष २८ महा नाध्यापहि शत्रुभय शत्रुभय, उनतीश महा नाध्या
 पहि वीर्यय स्वक वप्ती ३२ वर्ष महा, नाधीपहि जोर आउला

जाहुँ उहार सुत न्यावा निगुला ॥ लोक लेक रुणा गला ॥ मिथो रखा
वाहिला, बेतिक म्म बकुने गला ॥ गाइ मंति वकुने पाउला ॥ वजो
क्रोधी होला, अन्न वकुने वा पाल गला ॥ ज्या काम गन्धर्व निरफ न्या
हो वात रुग न्या होला, मन पापि छुडि कपत गन्धर्व होरा एक पाधि
अन्न काय पाथि तुला वन्या हो मति, ग्राह रग न्या माहा मा सुपाहि दु
ध धेउ गुलियो वस्तु सबे थोक ॥ अमिता खातु पुनि जाला, एति स्वभाव
जाजु भाइ संग नमि र्था कागारा धन्या ॥ राशी रखातु वात पित्र्याधि
जोर गाउला, धति रागाउला शीत भूत होरा, नाम रहुती यम काना

घाप छिपेट दुखला, रुक स दुखला, कपाल त्याक होला, राज भय वोर
भय एति रोग रे अकोल मृत्यु वर्ष २ महा तीन मास महा होरा नाधा
महि सुख पाकला, रुती गाउला दुतीय वर्ष मास ५ महा होरा दो द्वि
रोग होरा अमिता र जोर गाउला, येत दुखला, वर्ष ८ महा होला ना धा
पदि महा व्याधि लागला, कोकि गाउला, वोर काय दासि रोग रक्त प
बल पित्र जोर गाउला वर्ष १४ महा नाधी पदि भुत को दोष ले, दुखला
उछेना त्रिदुते, अथार वर्ष महा १८ होरा नाधी पदि संग्राम भय अति
सार होरा बीस वर्ष व्यंकी सब वर्ष २०। २५ वर्ष महा नाधी पदि मित्र

अथ वैसर्प होरा चौर नय एकतीसवर्ष महाशुभो ना नाधी पाहि पच
दुखला ॥ गोता महाघाउ होला ॥ सुल होरा, एस्म रोग करितो न
पनि कारित वर्ष ४० महा ॥ नाधी पाहि शत्रु नय चौर शत्रु नय ॥
वर्ष ६६ नाधी पाहि, प्रदेश जाना महाचौर ते जीवले ला वर्ष ५५ महा
पंचाशत नाधी, श्री कानि मित्रिते मृत्यु नय शत्रु घाट नय रतिषकाई
पुशका श्री वष जिवई, मृत्यु शत्रु घाट मासे रुख पक्षे सप्तमी धनि
छा, शुक्र वारादिने पूर्वाक्ष मयते अपमृत्यु वारणा ॥ अथ शय वेक कन दे
वदां ल मोहा उवा फल शुक्र या रथ प्रसा मयति जल जोग शिवक नदिज

भोजन वलिदान दीर्घायु नवति प्रवास पुगं मयते इति धनि धनि धने
हान क्षत्रको सुख दुख समाफ ॥ २३ ॥ ॥ शत प्रिया कोकन दरजा
पणी गोत्र वष नवाहन रादास जात अथ मत्त ॥ एवता रा पंचदश
मुकुर्त वरुणा देवता विलुदेवता उत्तरवार उदधुख महिम एउर
रतिशूर रात्र कुंभ रासी अथ सूतो जात ॥ एको फल रत्न वणि वानिज
कर्म न रा धन वादि होरा पाण्डित जोति की सुधी संतान दृष्टि राज
माया प्रदेश जाय सुधी दशकर्म न ला त्याला पंचता होरा चौर वेत
दीर्घ रोगी भोजन ना महा कुटुम्ब वृद्धि मान विद्या जा ला आमा निका

समाधारिधनवदुतेरुदेन हातमहावनरदुदेनदाताधर्मकर्मगर्त
पुरानकथासुन्नमनहोरावलमापिकरुबुधिवतं कुराजोरं अरुले
आयाउनुसकला अरुंकाली, होरा होरि, होरा सास्त्रिगतिरोपाड देन
अनिमासहनुनशक्रा। कुममहाहातमहापुतामहा येनमहाएति
महाएकथाउक्ताथिहोला अरुदेखि सरमानाहोरा अरुदेखिदराउ
भा शतेधपाउन्पाहोला शत्रुदेखिदराउन्पा॥३६॥पनिहोलाउफकार
गन्पाहोराको हाउ, महानिको गन्पा पनिगुणपाउदेन कृष्णवर्णविद्या
रागीथानकोनायकहोला रतिखिय क्रोधस्वभाव मायाबुद्धिभ्रा

अुलानिनहोला फूतलाउनमन्नरूपमाफिकहोला नीचजातिमहासग
गन्पा लोअहोरा कालावत्कमहाला भुक्तिवत्पीपनीहोला गारिगन्पा
वल्यागाउमहाला भगनौशुकैन प्रदेकवाटलाभ होला एकातारोमि
थो वत्समानिखायिदिन्याहोला॥ आहारगन्पा माहा मासु, मिथोअमि
रोपिरो वत्सरागनोमनहोला॥ एतेखभस्व॥ शरीरधानुवातपित्र॥
रोगश्रुतिवार॥ अजिर्ण॥ एतिरोगसे अकालमृत्यु, एकवर्षमहा
एकवर्षनाधी, पेतरोग, रक्तपय्याल, मुखसुनिला, कामलजोग एति
रोगनेअकालमृत्यु, वर्षदेपेटसुनिला आठवर्षमहा नाधीपछि व
तिलाआउला जीरआउला, गाइभंसरेहाला अथाऊवर्ष १८ महा

नाधिपति, आठपुखरा ॥ बीसवर्ष २० महा, नाधीपति, लिखुवाटव
सूला ॥ बीसवर्ष २० महा, नाधीपति, लिखुवाटव
बीसवर्ष २० महा, नाधीपति, लिखुवाटव
होरा ॥ बीसवर्ष २० महा, नाधीपति, लिखुवाटव
ला ॥ पितो ग्राउला, शुभत, विहो इन, शत्रुभयहोरा, नानारण, तीर.
एकतीसवर्ष २१ महा, होरा ॥ एतिनाथा पति, शत्रुभयसन्निपातजो
रग्राउला, बारिशवर्ष ४० महा, होरा, पारीशनाधीपति, शत्रुभय
सन्निपातजो, ग्राउला, पवाशवर्ष महा ५० होला, पवाशनाधीपति

गारश्रुते ग्राउला नागभयहोला ॥ ऐतिषकार्त्तशक्या देवि शताशीव
वर्ष २० जीवति ॥ मृत्युश्रवणमा ते भावपदमा ते कृष्णपदो मृत्युमांति
थौ भरणी नक्षत्रे, अथला शतप्रिया नक्षत्रे, शनिशरवारं स रे, सुनि
मिति देहि त्यजेत् ॥ अथ मृत्युकारण ॥ जलजोग, अग्निजोग, देववर्ष
काररात्रेण मंदपतति दुकरेण जीवति ॥ शुधोन दृश्यते ॥ निधिरथ
पन ॥ कुर्वकर्मसमाप्त ॥ इति सुखदुख शतप्रिया नक्षत्रकासमाप्त
॥ २४ ॥ ॥ अथ पूर्व २५ नक्षत्रकाफलमाह ॥ त्रिंशति मुहुर्त्त, अदि
कुलदेवता ॥ साककात्पायणी यणी गोत्र ॥ कामनया न शुनिश्रुति

देवता विधावस्तान् स तु यथा जात नरसन्व ॥ विहसन्व ॥ शनिश्चरन्व ॥
पाद ३ बृहस्पती क्षत्रपाद १ माहिमण्डल उर्ध्वमुख चैको फल शयन
तो जात स्येतवर्ण धर्म देत समस्त कु रा मुत होरा जानि होला वि
धा जां ला राजसेवक राजमान्य आपालक मर्ग दर्ता न होला त्यागी
धर्म गता स्वाधीनता ४ हो होरा होरा नायक होरा वो रवेत छितार
अति पृणि न्यक्तिकर्म गरा श्रुत हे तु शकेन श्रुतिमाती एकतारे दुष्का
विन्या होरा आपना भाग्य गदिहिन्या माया बुद्धि समा दु देन एको कु
उत्तम वर्ण होरा ॥ वास्तव काम हाडुली दिथे सुखी गीत महावजा ५ नम

हामहादर्व श्रुत काली विधावंत धर्मवंत दानवंत वंजालकर्म गरा
शत्रु विधापनी जांला ॥ मान्यवंत गंधीरा वीर शीलवंत वास्तवा वेद रि
५ अनेग अनेग शास्त्र जांला विधा सुखी फल लाउन मन होला सत्य
वांदि कुवेत मन आसशी निनव कुत विवदान हात महा धन रह
देन शील स्वभाव निको पंचमुखी हो सय कु विद्या गरा अतिथी पु
रुथा जाय मान्ये कुटु मरु दि होला ॥ श्रीवंत गीत वाद्य विवे गंधवा
रे विव होरा रति विवे कोतु रहो माया बुद्धि आकाही ति पंचन
कुंभ प्रिय होरा वज्र पुत्र निदर आहार मरु मास श्रुति हो मधु

पक्षाभोजनकरिय एतिवभाव शरीरका तुवातापि न हृदय दुःख
महाभयापनी कथिहोरा रोगश्रुतिसरि वेतलाग न्या होला ॥
षति लागुडला ॥ जोरशा बादुखला गुजीर्ण साक्षिरोन प्ररुशा
उला एतिरोन रे श्रु काल मनु मास ७ नाधी कास श्वा स पित्रश्लेष्म
पाउ श्रु ८ मा ८ पिडला गय नाधी मुखपाका दाहि दुरता य हाद
रा वर्ष १२ पीडला ने नाधी वेसर्ष पेतदुरत साक्षिरोन सत्रवर्ष १३
व्याधि श्रुल एकाईस वर्ष २१ महा होला नाद्या नदी पुवाह नयव
सा निपातित भय होला रागु निधने ती शवर्ष महा ॥ नाद्या प

हि हृदय दुःखला स निपात जोरशा उला चारिशवर्ष ४० संग्रा म
य होला नाधी पक्षि शस्त्रि घाट होला विष भय सौर भय नाग
भय पवाशवर्ष महा नाधी पक्षि शस्त्रि चार दश मूल साधिव
र्ष ६० महा नाधी पक्षि शस्त्रि भय हृदय दुःखला मन दुखरा
एतिवर्ष कुत्रुशक्या एवासी सता नवेस मा जिउह मरुशा श्वा
नमाति श्रुथवा जाड पद मा से कषु पक्षे य ममी रेवती नक्षत्र
शानि श्रु रदिने दोहिय जेतु श्रु प मरुवा रणा देवदा रुगु श्रु
उमर ७ क्षा रति न उ रदि श्रु नि पु मयते दुर्वा फिल सा मति

शिवकर्म विवर्कर्म दीपदान विजतपतिपञ्चवतकर्म अत्र वा
से न ७ तत्र ॥ इति पूर्वप्रद्वनका फलसमाफ ॥ २५ ॥
अथ उच्चरन्मन्त्रका फलमाह ॥ वितरात्री ॥ पंचतारी सविमुद्रार्ध
नं जयति गोत्रं अहिकुलदेवता स्वदेवता उत्तरगृहे ॥ पीठशतं मनुष्यजा
त गोत्रं ॥ वृद्धस्य पीपादृष्टान्मीनरासि अथ सुतो जात पीतवर्णा
धर्मवित्तं पुत्रि होरा शानि पुत्र धनाशु होला बालवम हादरिद्वं लि
धे धनवत भद्रसुखी होरा नरमे होरा अक्षजाला करुणा होरा हो
त मरु धनं रहु दैन कुरासि पाहु होरा गीत साधु विय होरा वाजा

विय होरा पुललाडनु विय होरा शुद्धकासी होरा माया बुद्धि सिपाह
होरा अन्न आशान्ग न होरा वलिया स्वा ॥ २६ ॥ होला कामसिपाह
होला हतिमानी स्व होला इष्ट मित्र वहुत होला इष्ट तारु न्या होरा
अन्न आग्य होला ॥ अरु ले कार्यग या को महा आ पुज स रिन्या होला
खेति नाग्य होरा त्यागी होला शास्त्रज्ञ होला वहुत होला होला पुदश
महासुख होला कर्मग न होला एकतारे देग रि। हिन्या होला
वहुत शानि कु दैन त्याखि एकथीर होला पाछि को पाति दोसि दूर
व न्या होला ॥ वीरवेत यदि पु रुख स्त्री सभाव होला ॥ अथि रा वि होरा

निरुद्धमा विस्मयान्न त्रिजायनि विषयति बहु पुत्रं बहुदासीदास
 निडरुत्सुताम । वीरानिरति । प्रिय ॥ मूलविक्रान्त विथ्य श्रुते स्वभाव आहा
 र मृष्टान्न भोजनस्य दक्षिणघृत मधुमांस माछापुरा प्रिये धातु वात
 पित्ररोग शु । तिसारलागे हादरावर्षा रमहाबद्धक ये सा । को रोग कृ
 कास श्वस रने रोग शुकात मृ वव आथे मुखपात साक्षि रोग वर्ध
 वयोदशे । ति जो रसाक्षि रोग वर्धसितादशे । ति सवुरोग मूल एकविंशे
 ति नदीपवार ववसि उ हानि ॥ महिवरय मन्निपात जो रे तीस व व
 मरुता मृत्युत्रय ॥ क्व वारीस वर्ध मरुता मया मय शत्रुशत्रुधाटपवाल

वर्ध मरुता मया मय शत्रुशत्रुधाटपवाल ॥ अहमहा ॥ शुता मरुता ॥
 एति मरुता एकठाउ कोठि होला ॥ एति स्वभाव होला ॥ आहार स मस्त रति
 होरा शरीर धातु वात पित्र होरा ॥ रोग रत्न पवार ॥ येन रोग वति रा हो
 रा ॥ शुक्तीर्ण होरा ॥ रोगका म म्या स होरा ॥ एति रोग ले शुकात मृत्युवर्ध
 र आथ मरुता होला ॥ आथ वर्ध ना घ्या पद्धि मुखपुति ला ॥ वति रा आडना
 साक्षि रोग होरा ॥ सन्निपात वर्ध र कपाल दुखला मरुता धितान ला
 दित ११ मास ७ मरुता देवदा वन वेट दुखला नववर्ध मरुता वाजवर्ध नाघी
 पद्धि पति ला आडना गा रु ले हाता ॥ भूत को दो व ले जो र आडना वर्ध ॥ ५

नाघीपाहि सासिरी गवर्ष १७ महा होला ॥ सत्रवर्ष नाघीपाहि वेतवर्ष हो
 ला ॥ ३८ लिखवर्ष १२ होला नाघीपाहि देवदौष होला ॥ रक्तपथा ल हो ला
 वी सत्रवर्ष २० महा होला ॥ नाघीपाहि ॥ शूल श्रु ३८ ला ॥ एकादशवर्ष महा
 होला नाघीपाहि सिमानवसूला ॥ वर्ष २६ महा ॥ नाघीपाहि नदी न
 य होला ॥ सिउ नय होला सन्निपात जोर श्रा ३८ ला नीसवर्ष महा होला
 नाघीपाहि शत्रु नय होला रुदय महा दुखला ॥ एकवारिशवर्ष महा
 होला ॥ नाघीपाहि संगा मशस्र घा ८ होला ॥ पंचाशवर्ष महा होला ॥
 पंचासनाघी कान ग्रन्थिवात होला ॥ साथिवर्ष ६० महा ॥ तनाघीपाहि ॥

शूल श्रु ३८ ला नानावाधिला मला ॥ इतिषद्वाच नुशक्या राताशीवर्ष जीव
 ति ॥ ७७ ॥ मृत्यु श्रा ३८ नमासेरुस पक्षे ॥ अष्टम्या तिथौ रेवती नक्षत्रे उरु
 वार सरे दीहित्य जेत ॥ अपमृत्यु वारणा देवदाह अमृत्या दुमर अकार
 ति नतुरदि अग्नि ७ मयत ॥ उर्वाफुले त्याम्यति शिवकर्म वैत्रकर्म दीप
 दान ॥ द्विजत पक्षि पूज्य ॥ अतकर्म अन्नपाशन पायस्य ॥ इति उन्नर अड
 नक्षत्र का सुख दुख ममा ॥ २६ ॥ ॥ अथ रेवती नक्षत्र कोफल माह
 ॥ त्रितारा वीसत्रे सुकृत् ॥ रुद्र देवता गंध देवता अपसगा रम्या गोत्र व
 क काहन देव जात हासि सन् ॥ उन्नर द्वार वरुणा तीक्ष्ण मीन रासि अथ

सूतो जात॥ संपूर्ण धर्म चेत अक्षर जात॥ जीवात्त धर्म मय कृत कुटुम्ब
वृद्धि होला॥ सुते वृद्धि मान होला॥ समस्त देव पूजा गर्नु प्रिय होला॥ गी
त वाधा प्रिय॥ कुरुता डनु प्रिये॥ समस्त काम प्रिये॥ सिपाह होला कुरा
॥ अनेक मित्र होला॥ दिनान लेला संपूर्ण निधान होला॥ सर्व लोक
पार्नु सकला॥ धर्म वत होला॥ दान वत अनेक तीर्थ जात्रा गर्नु होला॥
संपूर्ण निवृत्ति को होला॥ सर्व शस्त्र विनिपात होला॥ सर्व समावत होला
सर्व विवक्षणा होला॥ सर्व माया विद्या जात॥ सर्व लोक से मातृगर्त
राज माय होला॥ मन्त्री होला॥ सर्व सिंघुक्त होला॥ सर्व संपत्ति भरि पूरण हो

रा॥ सर्व शत्रु संहार गर्त॥ सर्व सुख पाडला॥ सर्व मुरी होरा राज संप
त्ति पाडला॥ यज्ञ हो मगर्त होरा अति मान स रू देन खाती ३ होला॥ उत्र
वत जा सुवि॥ कमारा कमासी होरा॥ गाइ भस्मिपनी खेति कर्म गत्या वहु
नैला॥ न होरा सखत व्यापार कर्म गत्या वहुते नाफा होला॥ जानिवत
होरा॥ अनुपूरा होरा॥ सर्व कर्म गर्त गरीर होला॥ मधुवचन होला॥ त्वर
वान निको होरा॥ आव॥ नामी होरा॥ आड॥ सर्व निको स रू जप मगर्त हो
रा॥ वैवाहा रनिको॥ अथा वय स अविदुरी होरा॥ नाथा पदिसुधी
भण्णा का कु रा थिर होरा॥ पाप कर्म न देन क पा ल म हा कु भ म हा ग
रा म हा पत

महा तिष्ठामहा एतिरकथा उमहा कथिहोरा तपनहोला खात्रिफ
वलामहा वसला मूलवीरहोला आहारपवा मृत सम त्ररुविहोला
राशिरुवातपिते रोग अतिसार वतिला आउताका सखासहोरा
बेतिरोग लेववर्ष अका लमपुहोर नाघीपहि अजि ए पोतरोग
आथ वर्षमहा नाघीपहि गोर आउला पोतरोगहोला ॥ तैध वर्षम
हा नाघीपहि आवा दुखला ॥ मुखसुनिला गणमा लाहोरा वटिरा
आउला एका ईसवर्षमहाहोरा नाघा पहि सपुड प्रयहोरा गाइ
भासि को प्रयहोला सतायी सवर्षमहाहोला ॥ नाघीपहि मंदवति
रा आउला ॥ रुखकाट वसला ॥ वायी शवर्षमहाहोला ॥ वायी वर्ष

नाघीपहि सग्रामको प्रयहोला ॥ वर्ष २८ महाहोला ॥ नाघीपहि ॥
आवा दुखला ॥ एकतीश वर्षमहाहोला ॥ एकतीश वर्ष नाघीपहि दे
वहो वलपिला ॥ पेंती शवर्षमहाहोला ॥ घाउ पाउ होला ॥ वर्ष ३८
अथतीश नाघीपहि अजीर्ण होरा पवा शवर्षमहाहोला ॥ दृढय
महा दुखला ॥ साथे वर्षमहाहोला नाघा पहि जोर आउला रक्तपवार
होला पोतवाथा होरा ॥ शत्रु प्रयहोला ॥ एति वहाहु नुशका उनाशी
वर्षसम जिउहु मृत्यु नाउ आश्रितमासे सपुमी अरु म्या किथो अशि
नी नरणा नक्षत्र उरुवारे अथता शनिवारे देही तज्योत ॥ अथ मृत्यु

वारण ॥ देवदारु शुश्रूष्य ॥ ५ न्य २७ क्षा रति ॥ तनुरदि ॥ अग्निपूज
 यते ॥ पूर्वोक्तं संमति ॥ शिवकर्म चैत्रकर्म ॥ दीपदानं द्विज
 तपस्विपूज्ये ॥ व्रतकर्म ॥ अन्नप्राशनं पशुशाल ॥ इति रेवती नक्षत्र
 का सुखदुःखसमाप्त ॥ ॥ १ स २ १ ६ वैशाखवदि ४ सिधितं संपूर्ण ॥